om-13 final_Page 1 and 2 07-10-2014 20:59 Page 8

कथा सरिता

खुशहाली का राज़

जापान के टोक्यो शहर के निकट एक कस्बा अपनी खुशहाली के लिए प्रसिद्ध था। एक बार एक व्यक्ति उस कस्बे की खुशहाली का कारण जानने के लिए सुबह-सुबह वहाँ पहुंचा। कस्बे में घुसते ही उसे एक कॉफी की दुकान दिखाई दी। उसने मन ही मन सोचा कि मैं यहाँ बैठकर चुपचाप लोगों को देखता हूँ और वह धीरे-धीरे आगे बढ़ते हुए शॉप के अंदर लगी एक कुर्सी पर जाकर बैठ गया। वह एक रेस्टोरेंट की तरह था। पर उसे वहां लोगों का व्यवहार थोड़ा अजीब सा लगा।

एक आदमी शॉप में आया और उसने दो कॉफी के पैसे देते हुए कहा -''दो कप कॉफी, एक मेरे लिए और एक उस दीवार पर।'' व्यक्ति ने यह सुना तो उसने दीवार की तरफ देखा तो उसे वहां कोई नज़र नहीं आया। उस आदमी को कॉफी देने के बाद वेटर दीवार के पास गया और उस पर कागज का एक टुकड़ा चिपका दिया, जिस पर ''एक कप कॉफी'' लिखा था।

व्यक्ति समझ नहीं पाया कि आखिर माजरा क्या है, उसने सोचा कि कुछ देर और बैठता हूँ और समझने की कोशिश करता हूँ। थोड़ी देर बाद एक गरीब मजदूर वहाँ आया, उसके कपड़े फटे-पुराने थे पर फिर भी वह पूरे आत्मविश्वास के साथ शॉप में घुसा और आराम से एक कुर्सी पर बैठ गया। व्यक्ति सोच रहा था कि एक मजदूर के लिए कॉफी पर इतने पैसे बर्बाद करना कोई समझदारी नहीं है। तभी वेटर मजदूर के पास ऑर्डर लेने पहुंचा -''सर, आपका ऑर्डर प्लीज़।'' वेटर बोला। ''दीवार से एक कप कॉफी'', मजदूर ने जवाब दिया। वेटर ने मजदूर से बिना पैसे लिए एक कप कॉफी दी और दीवार पर लगे ढेर सारे कागज के टुकड़ों में से 'एक कप कॉफी' लिखा एक टुकड़ा निकाल कर डस्टबिन में फेंक दिया।

व्यक्ति को अब सारी बात समझ में आ गयी थी। कस्बे के लोगों का जरूरतमंदों के प्रति यह रवैया देखकर वह भाव-विभोर हो गया। उसे लगा सचमुच लोगों ने मदद का कितना अच्छा तरीका निकाला है, जहां एक गरीब मजदूर भी बिना अपना आत्मसम्मान कम किये एक अच्छी सी कॉफी की दुकान में खाने-पीने का लाभ ले सकता है। अब वह उस कस्बे की खुशहाली का कारण जान चुका था और इन्हीं विचारों के साथ वापस अपने शहर लौट गया।

खुदा को पसंद 'रहमत'

एक राजा को शिकार का शौक था। अकसर वह वन में जाता और शिकार कर बहुत आनंदित होता। एक दिन वह अपने घोड़े पर बैठे अकेले शिकार पर निकला। सारा दिन गुजर गया, पर उसे कोई शिकार हाथ न लगा। शाम को वह झरने के पास रुक गया और पानी पीकर अपनी थकान मिटाने लगा। तभी उसे पास की झाड़ी में एक हिरन शावक दिखा। राजा ने दौड़कर उसे पकड़ लिया। अंत में ही सही, शिकार मिलने पर उसके हर्ष का कोई ठिकाना न रहा। उसने एक रस्सी में हिरण शावक के पैर को घोड़े के जीन से बांधा और महल की ओर लौटने लगा। पीछे-पीछे वह शावक भी घिसटते हुए आने लगा। काफी आगे आने पर राजा को महसूस हुआ कि कोई और भी उसके पीछे आ रहा है। उसने पलटकर देखा तो एक हिरणी उसके पीछे आ रही थी। उसकी आँखों में आँसू थे और शावक की ओर देखते हुए वह बेसुध सी चली आ रही थी। राजा को समझने में देर न लगी कि हिरणी शावक की माँ है। उसने घोड़े को रोक दिया। हिरणी आगे बढ़कर शावक को चाटने लगी। यह दृश्य देख राजा का दिल भर आया। उसने शावक के पैर से रस्सी खोल दी और खड़ा हो हिरणी और उसके बच्चे के प्रेम को देखने लगा। राजा को देख हिरणी का भय बना रहा, वह कभी अपने शावक को देखती तो कभी राजा को। यह देखने के बाद राजा महल की ओर चल दिया। उस रात उसे स्वप्न में एक देवदूत के दर्शन हुए। वे बोले-तुमने एक मूक प्राणी पर दया की है। खुदा को रहमत से अधिक कुछ पसंद नहीं। तू एक नेक बादशाह है, तुझसे यही उम्मीद है कि इसी तरह का रहम तू अपनी प्रजा के साथ भी करेगा। दया को धर्म का मूल कहा गया है। इसका अर्थ यही है कि हम दूसरे जीवों के सुख-दु:ख को अपना समझें और खुशी बांटें।

टेस्ट

प्राचीन यूनान में सुकरात को महाज्ञानी माना जाता था। एक दिन उनकी जान-पहचान का एक व्यक्ति उनसे मिलने आया। और बोला, ''क्या आप जानते हैं मैंने आपके एक दोस्त के बारे में क्या सुना?'' ''एक मिनट रूको,'' सुकरात ने कहा, ''तुम्हारे कुछ बताने से पहले मैं चाहता हूँ कि तुम एक छोटा सा टेस्ट पास करो, इसे ट्रिपल फिल्टर टेस्ट कहते हैं।'' व्यक्ति चौंक गया कि 'ट्रिपल फिल्टर?' सुकरात ने कहा, ''हाँ सही सुना तुमने। इससे पहले कि तुम मेरे दोस्त के बारे में कुछ बताओ, अच्छा होगा कि हम कुछ समय लें और जो तुम कहने जा रहे हो उसे फिल्टर कर लें। इसीलिए मैं इसे ट्रिपल फिल्टर टेस्ट कहता हूँ। पहला फिल्टर है सत्य। क्या तुम पूरी तरह आश्वस्त हो कि जो तुम कहने जा रहे हो वो सत्य है?

व्यक्ति ने जवाब दिया, ''नहीं। दरअसल मैंने ये किसी से सुना है और ...'' सुकरात ने कहा, ''ठीक है। तो तुम विश्वास से नहीं कह सकते कि ये सत्य है या असत्य। चलो अब दूसरा फिल्टर है अच्छाई। ये बताओ कि जो बात तुम मेरे दोस्त के बारे में कहने जा रहे हो तो क्या वो कोई अच्छी बात है?

व्यक्ति ने जवाब दिया, नहीं बल्कि ये तो बिल्कुल उल्टा है। यह तो खराब बात है। सुकरात ने कहा, ''तो तुम मुझे उसके बारे में कुछ बुरा बताने वाले हो। लेकिन तुम आश्वस्त नहीं हो कि वह सत्य है। कोई बात नहीं तुम अभी भी टेस्ट पास कर सकते हो। क्योंकि अभी एक अंतिम तीसरा फिल्टर बचा हुआ है। उपयोगिता का फिल्टर। मेरे दोस्त के बारे में जो आप बताने वाले हो क्या वो मेरे लिए उपयोगी है?''व्यक्ति ने कहा, नहीं, कोई खास नहीं। सुकरात ने कहा, ''अच्छा, यदि जो तुम बताने वाले हो वो ना सत्य है, ना अच्छा है और ना उपयोगी है तो उसे सुनने से क्या लाभ। और ये कहते हुए वे अपने काम में व्यस्त हो गये।

द्रवित हृदय से की सेवा ही आराधना

शिष्य गुरु के पास मिलने आया था। शाम को वह अन्य शिष्यों के साथ भोजन करने के लिए बैठा। संत भीतर की कोठरी में भोजन कर रहे थे। एक सेवक भीतर आया और बोला- संत भोजन करने बैठे लेकिन अन्न ग्रहण करने से मना कर रहे हैं। आगंतुक गुरु का प्रिय शिष्य था। अपना खाना छोड़ गुरु के पास भागा। उसे देखते ही गुरु ने गरजकर कहा- तुम्हें परमात्मा का डर नहीं कि तुम बेखौफ होकर इस तरह के कार्य कर रहे हो? शिष्य यह सुनकर सन्न रह गया। उसने पूछा-महाराज बताएं मुझसे क्या गलती हुई? संत ने कहा- तेरे पड़ोसी का परिवार पिछले सात दिनों से भूखा है। वह किसी दुकानदार से कुछ अनाज उधार लेने गया तो उसे वह भी नहीं मिला। वह खाली हाथ भूखे परिवारजनों के पास पहुँचा। शिष्य को बड़ा दु:ख हुआ, वह बोला-मुझे खेद है लेकिन मुझे इसकी कोई जानकारी नहीं थी। यह बात सुनते ही संत ने कहा- यही कारण है कि मुझे और अधिक गुस्सा आ रहा है। तुम्हारे पड़ोसी के घर सात दिनों से चूल्हा नहीं जला और तुम्हें इसकी जानकारी तक नहीं। तुम्हारा यह कथन माना ही नहीं जा सकता। अपनी थाली एवं बहुत सा भोजन शिष्य को देते हुए संत ने कहा- यह भोजन लेकर पड़ोसी के घर जाओ और वहाँ उसके साथ बैठकर भोजन करो, जिससे उसे शर्म महसूस न हो। कुछ अनाज चुपचाप उसके घर बिछी चटाई के नीचे रख दो ताकि अगले कुछ दिन की व्यवस्था भी हो सके। तुम यह सब कर आओ, उसके बाद ही मैं भोजन करूंगा। शिष्य ने ऐसे ही किया और उसके बाद ही गुरू ने भोजन किया। धर्माचरण की शुरुआत दूसरों के प्रति संवेदना से होती है। गरीब और असहायों की परेशानियों के प्रति निष्ठुर बने रहें और उपासना आयोजन करते रहें तो उसका कोई औचित्य नहीं। दूसरों के कष्टों को देखकर उनके लिए हृदय के द्रवित होने पर की गई सेवा ही परमात्मा की श्रेष्ठ आराधना है।

तपा-मंडी(पंजाब)। एस.डी.एस. शिव लाल को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. उषा।

मुम्बई-विले पार्ले। उत्कृष्ट व नि:स्वार्थ सेवाओं के लिए बृहन मुम्बई महानगरपालिका की ओर से मेयर द्वारा अवॉर्ड प्राप्त करते हुए ब्र.कु. योगिनी।

जम्मू। एम.पी. जुगल किशोर शर्मा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सुदर्शन।

जोवट-म.प्र.। रक्षाबंधन के पावन अवसर पर वृद्धाश्रम के वृद्ध भाई-बहनों को राखी बांधते हुए ब्र.कु. मंजू।

कौशाम्बी। परियोजना निर्देशक आर.सी. पांडेय को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. कमल।

इन्दौर-मण्डलेश्वर। जिला जज श्रवणकुमार रघुवंशी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सारिका।

मोहम्मदाबाद-उ.प्र.। आई.पी.एस. कृपा शंकर को राखी बांधते हुए ब्र.कु. मीरा,सेवाकेन्द्र संचालिका।